संस्थापित १८६७ ई०

ओ३म्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२२ ● अंक : प्रथम ● ०३ जनवरी २०१७ पौष शुक्ल पक्ष पंचमी संवत् २०७३ ● दयानन्दाब्द १९२ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३११७

महर्षि विरजानन्द जी द्वारा शिष्य दयानन्द से समावर्तन पर अदभुत गुरू दक्षिणा मांगना

–पं० उम्मेद सिंह विशारद

भारत के इतिहास में ऐसी गुरुदक्षिणा पहले न मांगी गई और न भविष्य में मांगने की सम्भावना है।

अद्भुत चिन्तन ऋषि विरजानन्द जी का

ईश्वर की सृष्टि में जब ऋतः सत्य का सन्तुलन डगमगाने लगता है, तभी ऋतः सत्य का सन्तुलन बनाने के लिए ईश्वरीय व्यवस्थानुसार इस धरती पर विलक्षण महापुरूषों का जन्म होता है। ऐसे ही दो महापुरूषों का भारत में इस युग में जन्म हुआ था, एक महर्षि विरजानन्द सरस्वती जी और दूसरे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी हुए है। ऐसा निम्न चिन्तन कान्त दर्शी देवता की आत्मा में ही आ सकता है।

विलक्षण गुरु दक्षिणा मांगना–

महापुरूषों का कार्य संसार को ऋत सत्य की ओर मोड़ना होता है। महर्षि विरजानन्द जी का मानवो को सुखी करने का चिन्तन सर्व प्रथम यह था कि भारत की गुलामी के निम्न कारण है और संसार को इसका ज्ञान कराना आवश्यक है। संसार सर्व शक्तिमान ईश्वर को भूलता जा रहा है और उसकी जगह मनुष्य रूपी तथा कथित भगवानों की पूजा कर रहा है। ईश्वरीय वाणी वेदों को भूल कर अनेक पाखण्डों में फंस गया है, वैदिक धर्म के स्थान पर अनेक अलग-अलग मतों को स्थापित करके उसको धर्म कह कर सामान्य जनता को भटका रहा है। ऋषियों द्वारा आर्ष ग्रन्थों को न मान कर अनार्ष ग्रन्थों को मान कर संसार को भ्रमित कर रहा है। सामजिक अन्धविश्वासों में नारी को पढ़ने का अधिकार नहीं है शूद्रों को पढ़ने का अधिकार नहीं है। जाति-पाति छुआ-छूत का प्रचार करना आदि अनेक सामाजिक कुरीतियों द्वारा समाज का पथ भ्रष्ट करना। वीरो व राजाओं को सत्य-शास्त्र व शस्त्र विद्या का मार्ग न बताकर बुंतो की पूजा करके राष्ट्र रक्षा करने की शिक्षा न देना, तथा अनेक धार्मिक अन्धविश्वासों के मानने वा मनवाने से हमारे राष्ट्र भारत वर्ष सदियों से आन्तिरिक व

शेष पृष्ठ -५ पर

वेदामृतम्

अदिते मित्र वरुणोत मळ”, यद्वो वयं चकृमा कच्चिदागः”।
उर्वश्यामभयं ज्योतिरिन्द्र°”, मानोदीर्धा अभिनशन् तमिस्त्राः।।

ऋग् २.२७.१४

मैं आज देवों को पुकार रहा हूँ। हे अदिति! हे मित्र! हे वरुण! हे इन्द्र! तुम हमें दुःख-पारावारसे निकालकर सुखी करो। कभी खण्डित होनेवाली, अजर-अमर बनी रहने वाली जगन्माता अदिति है। 'मित्र' मन है, 'वरुण' प्राण है, 'इन्द्र' जीवात्मा है। इसके प्रति हम अपने जीवन में अनेक अपराध करते हैं। जगन्माता अदिति ने जो वेदोपदेश दिये हैं, और मनुष्य के लिए जो नैतिक नियम निर्धारित किये हैं, उन्हें हम भंग करते हैं। मन-रूप मित्र जो शुभ संकल्प करता है, उसकी हम उपेक्षा करते हैं। प्राण-रूप वरुण जिस पद्धति से शरी को चलाना चाहता है, उसके प्रतिकूल चलकर हम उसमें बाधा उपस्थित करते हैं। आत्मा-रूप इन्द्र की अन्र्तवाणी को अनसुना कर हम उसके प्रति भी अपराध करते हैं। सामाजिक दृष्टि से अदिति राष्ट्रभूमि है, यतः वह अच्छेद्य, अभेद्य एवं अखण्डनीय होती है। 'मित्र' सर्वभूत-मैत्री का प्रसारक विद्वान् ब्राह्मण है। 'वरुण' शत्रुओं को पाशों में बांधने वाला सेनापति है। 'इन्द्र' राजा है।

हम यदि राष्ट्रभूमि के साथ विद्रोह या विश्वासघात करते हैं, राष्ट्र के विद्वान ब्राह्मण का अपमान करते हैं या उनके मैत्री के सन्देश को खण्डित करते हैं, लुके-छिपे शत्रु-पक्ष की सहायता कर सेनापति के कार्य में विघ्न उपस्थित करते हैं, राजनियमों को भंग कर राज-विद्रोह करते हैं, तो हमारा यह सब कार्य-कलाप राष्ट्रीय या सामाजिक देवों के प्रति अपराध है। उपर्युक्त समस्त, आध्यत्मिक और राष्ट्रीय देव हमारे अपराधों के व्यसन से हमें मुक्त कराकर हमें सुखरी करें। हे इन्द्र! हे आत्मन्! हे राजन्! हमपर ऐसा अनुग्रह करो कि हस विस्तीर्ण निर्भय ज्योति को प्राप्त करें। हमारे जीवन में जो निराशा, असफलता, उत्साहहीनता, चिर-उदासीनता आदि की तमःपूर्ण निशाएं कभी-कभी आ जाती है, उनमें हम उद्धार पा जाएं, और हम अपने जीवन को आशा, सफलता, उत्साह, स्फूर्ति एवं कर्मण्यता से ओत-प्रोत बनाकर संसार-समर में सद विजयी होते रहें।

साभार
वेदमञ्जरी

आर्य कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय खुर्जा में सामवेद परायण यज्ञ सम्पन्न

आर्य कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय खुर्जा जनपद बुलन्द शहर में दिनांक १८ दिसम्बर २०१६ को सामवेद परायण यज्ञ आर्यप्रतिनिधि सभा के कार्यवाहक प्रधान डॉ० धीरज सिंह सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरा नन्द सरस्वती प्रधानाचार्या, अध्यापिकायें, छात्राओं आदि की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने यज्ञ की समाप्ति के पश्चात् अपने उद्बोधन में कहा कि पृथ्वी पर यज्ञ से बढ़कर कोई श्रेष्ठ कर्म नही है प्रत्येक मनुष्य को यज्ञ रूपी श्रेष्ठ कर्म अवश्य करना चाहिए इससे हमारी

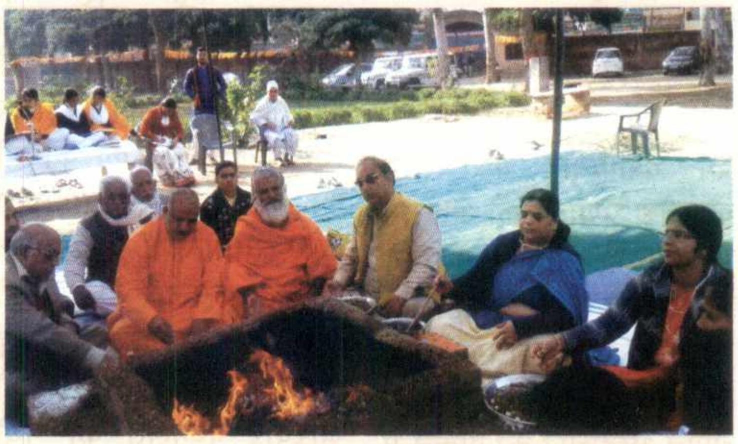

संस्कृति, पर्यावरण व स्वयं की शुद्धी होती है। जो आज के समय में अति आवश्यक है। यज्ञ के महत्व को समझाने के लिए ही महर्षि याज्ञवल्क्य ने वेद मंत्रों के आधार पर ब्राह्मण ग्रन्थ की रचना की है जिसमें यज्ञ कर्म की सूक्ष्म से सूक्ष्म क्रिया पर पूर्ण प्रकाश डाला है। सभा के कार्यवाहक प्रधान डॉ० धीरज सिंह ने अपने सम्बोधन में कहा कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में एक प्रश्न के उत्तर में लिखते हैं कि "जिस मनुष्य के शरीर में जितना दुर्गन्ध उत्पन्न हो के वायु और जल को विगाड़ कर रोगोत्पत्ति का निमित्त होने से प्राणियों को दुःख प्राप्त कराता है उतना ही पाप उस मनुष्य

शेष पृष्ठ -६ पर

देवेन्द्रपाल वर्मा प्रधान/संरक्षक | **डॉ. धीरज सिंह** कार्यवाहक प्रधान | **स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती** मंत्री/प्रधान सम्पादक | **आचार्य वेदव्रत अवस्थी** सम्पादक

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

डिजिटल मुद्रा और भारत

आंग्ल नव वर्ष के आगमन के साथ ही देश में नगद मुद्रा के स्थान पर डिजिटल मुद्रा के चलन के लिए नयी बहस शुरू हो गयी है। पुराने नोट बन्द होने के बाद बाजार में नगद मुद्रा की कमी है इस कमी को दूर करने के लिए सरकार ने कैशलश लेन–देन को प्रोत्साहित करने की घोषणा की है। इसके सफल होने में लोग तरह–तरह की आशंकायें जाहिर कर रहे हैं। लोगों की सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से जमाखोरी की आदत से परिस्थितियां गम्भीर हो जाती हैं। हालांकि अर्थशास्त्रियों का आकलन है कि नये नोटों के चलन में आने से देश की अर्थव्यवस्था पर अनुकूल असर पड़ने की सम्भावना है।

बदलाव की इस बयार में तमाम आशंकाओं को दरकिनार कर लोग कैशलेश प्रणाली को अपनाने में लगे हैं, भविष्य में यदि खरीददारी में व व्यवहार में लोग इसे अपनाते हैं तो निश्चित तौर पर देश में व्याप्त भ्रष्टाचार को रोकने में मदद मिलेगी जो देश को विकसित करने में सहायक होगी।

पूर्व में स्व. राजीव गांधी के समय में कम्प्यूटर को भारत में प्रयोग के समय जो लोग तरह–तरह की अटकलें लगाते थे वह आज उसका प्रयोग तो करते हैं, गुणगान नहीं। कड़वी दवा से स्वाद खराब हो जाता है लेकिन स्वास्थ्य बेहतर होने से कोई रोक नहीं सकता है। यही हाल इस नोट बंदी को लेकर विपक्ष ने जिस तरह की भूमिका निभायी है वह उचित नहीं कही जा सकती। सवा अरब भारतीयों की सर्वोच्च प्रतिनिधि संस्था क्षुद्र राजनीति के चलते हंगामें की भेट चढ़ जाये यह सही नहीं है। संसद के दोनों सदनों की बैठके व्यर्थ गयीं यह लोकतंत्र की मर्यादा के विरूद्ध है।

भारत में इलेक्ट्रानिक माध्यम से लेन–देन से सामाजिक व आर्थिक स्तर पर तमाम तरह के फायदे हो सकते हैं जिससे आर्थिक समावेशन में भी ईमानदारी होगी। विश्व स्तर पर भी काफी फायदा होगा। सरकार द्वारा यदि भविष्य में डिजिटल मुद्रा चलन में जारी की जाती है तो इसके प्रयोग में आसानी होगी तथा सुरक्षित भी रहेगी। नकली मुद्रा का आस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा। इस सम्बन्ध में डिजिटल भुगतान समिति के अध्यक्ष श्री रतन पी. वताल की रिपोर्ट महत्वपूर्ण है जिसमें उन्होंने बताया है कि भारत में डिजिटल भुगतान को आगे बढ़ाने के लिए एक नियामक का गठन किया जाना आवश्यक है जो भुगतान में प्रतिस्पर्धा, खुलापन, सूचनाओं के आदान–प्रदान को बढ़ाकर डिजिटल अन्तर की कमियों को दूर करने में सहायता करे। सामाजिक व आर्थिक रूप से कमजोर समूहों को इसमें शामिल करके इस नई तकनीकि को अपनाने की जोरदार वकालत की गयी है।

डिजिटल मुद्रा के चलन से, नोटों की छपाई व वितरण आदि के खर्च वास्तव में कम होंगे। भुगतान प्रणाली आसान होने से मुद्रा से सम्बन्धित अव्यवस्थायें नियंत्रित होगी। कालेधन को जड़ से खत्म करने में मदद मिलेगी। भारत के रग–रग में फैले भ्रष्टाचार रूपी विष को निकालने में भी इससे काफी मदद मिलेगी बस जरूरत थोड़े इंतजार की है। इस सम्बन्ध में विश्व बैंक के भारत में निदेशक श्री ऑननोरूल का कहना सही है कि "भारत विश्व की सूचना तकनीकि का पावर हाउस है, लेकिन इसकी बहुत बड़ी आबादी अभी भी इसके लाभों से वंचित है।" कमजोरी हमारी विरासत नहीं बशर्ते हम मानसिक रूप से तैयार हों।

– कार्यकारी सम्पादक

गतांक से आगे ....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ तृतीय समुल्लासारम्भः

अथाऽध्ययनाऽध्यापनविधिं व्याख्यास्यामः

प्रश्न– चन्दनादि घिस के किसी को लगावे वा घृतादि खाने को देवे तो बड़ा उपकार हो। अग्नि में डाल के व्यर्थ नष्ट करना बुद्धिमानों का काम नहीं?

उत्तर–जो तुम पदार्थविद्या जानते तो कभी ऐसी बात न कहते। क्योंकि किसी द्रव्य का अभाव नहीं होता। देखो! जहां होम होता है वहां से दूर देश में स्थित पुरुष के नासिका से सुगन्ध का ग्रहण होता है वैसे दुर्गन्ध का भी। इतने ही से समझ लो कि अग्नि में डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म हो के फैल के वायु के साथ दूर देश में जाकर दुर्गन्ध की निवृत्ति करता है।

प्रश्न– जब ऐसा ही है तो केशर, कस्तूरी, सुगन्धित पुष्प और अतर आदि के घर में रखने से सुगन्धित वायु होकर सुखकारक होगा?

उत्तर–उस सुगन्ध का वह सामर्थ्य नहीं है कि गृहस्थ वायु को बाहर निकाल कर शुद्ध वायु को प्रवेश करा सके क्योंकि उस में भेदक शक्ति नहीं है और अग्नि ही का सामर्थ्य है कि उस वायु और दुर्गन्धयुक्त पदार्थों को छिन्न–भिन्न और हल्का करके बाहर निकाल कर पवित्र वायु को प्रवेश करा देता है।

प्रश्न– तो मन्त्र पढ़ के होम करने का क्या प्रयोजन है?

उत्तर–मन्त्रों में वह व्याख्यान है कि जिससे होम करने में लाभ विदित हो जायें और मन्त्रों की आवृत्ति होने से कण्ठस्थ रहें। वेदपुस्तकों का पठन–पाठन और रक्षा भी होवे।

प्रश्न– क्या इस होम करने के बिना पाप होता है?

उत्तर– हाँ! क्योंकि जिस मनुष्य के शरीर से जितना दुर्गन्ध उत्पन्न हो के वायु और जल को बिगाड़ कर रोगोत्पत्ति का निमित्त होने से प्राणियों को दुःख प्राप्त कराता है उतना ही पाप उस मनुष्य को होता है। इसलिये उस पाप के निवारणार्थ उतना सुगन्ध वा उससे अधिक वायु और जल में फैलाना चाहिए और खिलाने पिलाने से उसी एक व्यक्ति को सुख विशेष होता है। जितना घृत और सुगन्धादि पदार्थ एक मनुष्य खाता है उतने द्रव्य के होम से लाखों मनुष्यों का उपकार होता है परन्तु जो मनुष्य लोग घृतादि उत्तम पदार्थ न खावें तो उनके शरीर और आत्मा के बल की उन्नति न हो सके, इस से अच्छे पदार्थ खिलाना पिलाना भी चाहिए परन्तु उससे होम अधिक करना उचित है इसलिए होम का करना अत्यावश्यक है।

प्रश्न– प्रत्येक मनुष्य कितनी आहुति करे और एक–एक आहुति का कितना परिणाम है?

उत्तर– प्रत्येक मनुष्य को सोलह–सोलह आहुति और छः–छः माशे घृतादि एक–एक आहुति का परिणाम न्यून चाहिये और जो इससे अधिक करे तो बहुत अच्छा है। इसीलिए आर्यवरशिरोमणि महाशय ऋषि, महर्षि राजे, महाराजे लोग बहुत सा होम करते और कराते थे। जब तक इस होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था, अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाय। ये दो यज्ञ अर्थात् ब्रह्मयज्ञ जो पढ़ना–पढ़ाना सन्ध्योपासन ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना करना, दूसरा देवयज्ञ जो अग्निहोत्र से ले के अश्वमेध पर्यन्त यज्ञ और विद्वानों की सेवा संग करना परन्तु ब्रह्मचर्य में केवल ब्रह्मयज्ञ और अग्निहोत्र का ही करना होता है।

ब्राह्मणस्त्रणाणं वर्णानामुपनयनं कर्तुमर्हति राजन्यो द्वयस्य वैश्यो वैश्यस्यैवेति।
शूद्रमपि कुलगुणसम्पन्न मन्त्रवर्जमनुपनीतमध्यापयेदित्येके।

यह सुश्रुत के सूत्रस्थान के दूसरे अध्याय का वचन है। ब्राह्मण तीनों वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य, क्षत्रिय क्षत्रिय और वैश्य वैश्य एक वैश्य वर्ण को यज्ञोपवीत कराके पढ़ा सकता है और जो कुलीन शुभलक्षणयुक्त शूद्र हो तो उस को मन्त्रसंहिता छोड़ के सब शास्त्र पढ़ावें। शूद्र पढ़े परन्तु उस का उपनयन न करे यह मत अनेक आचार्यों का है। पश्चात् पांचवें व आठवें वर्ष लड़के लड़कों की पाठशाला में और लड़की लड़कियों की पाठशाला में जावें। और निम्नलिखित नियम–पूर्वक अध्ययन का आरम्भ करें।

षट्त्रिंशदाब्दिकं चर्य्यम् गुरौ त्रैवैदिकं व्रतम्।
तदर्धिकं पादिकं वा ग्रहणान्तिकमेव वा।। मनु०।।

अर्थ– आठवें वर्ष से आगे छत्तीसवें वर्ष पर्यन्त अर्थात् एक–एक वेद के साङ्गोपाङ्ग पढ़ने में बारह–बारह वर्ष मिल के छत्तीस और आठ मिल के चवालिस अथवा अठारह वर्षों का ब्रह्मचर्य और आठ पूर्व के मिल के छब्बीस व नौ वर्ष तथा जब तक विद्या पूरी ग्रहण न कर लेवे तब तक ब्रह्मचर्य रक्खे।

क्रमशः अगले अंक में ....

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज को समर्पित एक राज परिवार उसके मुखिया...

धरोहर....... राजा रणंजय सिंह जी आर्य

– स्वामी धर्मेश्वरनन्द सरस्वती

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० ने अपनी शताब्दी मनाई थी डी.ए.वी. कालेज लखनऊ के प्रांगण में एक मेला लगा था वर्ष १९८६–८७ में उन दिनों पं० इन्द्रराज जी प्रधान और श्री मनमोहन जी तिवारी मन्त्री पद पर प्रतिष्ठत थे अजमेर के बाद मेरे जीवन का बहुत विशाल कार्यक्रम था। आर्यवीर दल उ०प्र० का मुख्य संचालक होने के नाते प्रदेश के सभी आर्य वीरों को बड़ी तैयारी से लाया था हजारों की संख्या में आर्यवीर व्यवस्था एवं सुरक्षा में लगे थे शोभायात्रा भी दर्शनीय थी सारे कार्यक्रम भव्य प्रभावशाली थे।

इस अवसर पर हमारे लिए महत्वपूर्ण पल थे "राजा रणञ्जय सिंह जी" से परिचय–वार्तालाप, फोटोग्राफ, उनसे मिलकर जो उस समय हर्षानुभूति हुई थी उसे लेखनी लिखने में असमर्थ है वाणी बोलने में अक्षम है विचारों का ताना–बाना इधर– उधर घूमता रहता है और मंच क एक कोने पर आकर रुक जाता है जहां राजा जी कुर्सी पर बैठे हुए हैं। आपने भी बहतों ने यह दृश्य देखा होगा लेकिन मेरे लिए एक नया संसार था मेरी कल्पनाओं का अथाह समुद्र था मुझे बार–बार महर्षि दयानन्द जी का वह दृश्य दिखाई दे रहा था कि काशी शास्त्रार्थ मध्यस्थ के रूप में हैं अमेठी के राज ईश्वरी सिंह जी और दोनों तरफ शास्त्रार्थ सफर के योद्धा है एक तरफ वाराणसी के २७ विद्वान पण्डित हैं और एक तरफ प्रमुख योगीराज महर्षि दयानन्द जी हैं और वे विजयी होकर भी राजा की दृष्टि में विजयी नहीं लग रहे हैं, क्योंकि वे पक्षपाती पञ्च की भूमिका निभा रहे हैं। बाद में पश्चाताप भी करते हैं और क्षमायाचना करके महर्षि का सम्मान भी अपने राजदरबार में बुलाकर करते हैं। अमेठी के राजा की भूमि आज भी वाराणसी में आनन्द बाग के नाम से है जहां काशी शास्त्रार्थ स्थल, दुर्गा कुण्ड पर बना हुआ है। मेरी दृष्टि वह सारे दृश्य को देख रही थी कि ये राजा उन्हीं के पौत्र हैं जो आज महर्षि के प्रति समर्पित भाव से प्रत्येक आर्य सन्यासी विद्वान–उपदेशक का सम्मान कर रहे हैं आज कोई पक्षपात अथवा सन्देह नहीं है। आज पूर्ण प्रसन्न वदन है। सिर पर टोपी लगाये आंखों पर उपनेत्र सजाये भारी भीमकाय शरीर ओजस्वी तेजस्वी यशस्वी आंखों में तेजलिए मुख मण्डल की शोभा हास्य पुट से कोई गुना बढ़ रही है। सामान्य से वस्त्रों में भी विशेष आभाछिपी है। प्रत्येक व्यक्ति मिलने में संकोच करता है, लेकिन वह उसकी भ्रान्ति है जो मिलकर ही दूर हो पाती है मुझे वे क्षण आज भी नवीन से लग रहे हैं।

उन्होंने ब्रह्मचारियों का स्वागत किया और अपनी एक कविता सुनाई कुछ संस्मरण सुने और उन्होंने अमेठी आने का नियन्त्रण दिया हमारे भ्राता डॉ० ज्वलन्त कुमार जी शास्त्री अमेठी में ही पढ़ाते हैं वे कहा करते थे कि कभी अमेठी आओ उस समय अमेठी इतनी प्रसिद्ध नहीं थी जितनी आज है मन में आया कि राजा साहब का भी महल देखेंगे और भ्राता जी से भी मिलेगें हमारे एक भ्राता जी वेद प्रकाश जी शास्त्री भी एक इण्टर कालेज में प्रवक्ता थे वे भी अमेठी रहते थे एक भ्राता सत्यकाम जी भी अमेठी रहते थे अतः सभी से मिलना हो जायेगा ऐसा सोचकर वाराणसी से वापसी में काशी विश्वनाथ द्वारा अमेठी उतर गया और तीनों मित्रों से मिला रात्रि निवास किया तब

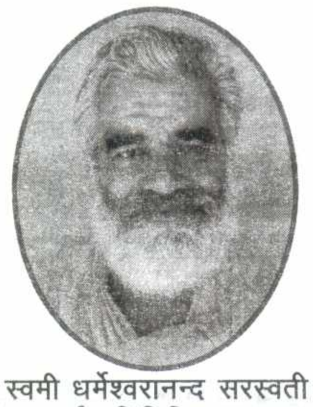

स्वमी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मन्त्री– आर्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ

प्रातःकाल महल देखने का क्रम बनाया और राजा रणञ्जय सिंह जी के दर्शन किये वार्ता हुई तथा पुरानी बातें नवीन हो गई आर्यसमाज के विषय में काफी देर तक वार्ता होती रही। आपकी इच्छा थी कि मेरे बाद मेरा बेटा संजय सिंह जी आर्य समाज का सदस्य बने और सक्रिय होकर नेतृत्व करे परपता नहीं कौन सी राजनीति थी जो उनके चाहते हुए भी उन्हें राजकुमार बनाकर तो रक्खा पर आर्य कुमार नहीं बना पाये। आर्य समाज के प्रचार में वे दूर–दूर तक जाते रहे आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के वे प्रधान पद पर सुशोभित रहे आर्थिक रूप से भी सभा को लाभ हुआ आप सांसद भी बने उ०प्र० सरकार में भी रहे लेकिन आर्य समाज को नहीं छोड़ा आपका यह दृढ़ निश्चय था कि हमारे पूर्वजों ने जो मार्ग अपनाया हम उसी का अनुकरण करेगें। वे कहा करते थे कि महर्षि दयानन्द सरस्वती का हमारे ऊपर कितना उपकार है हम कई जन्मों में नही उतार सकेगें क्योंकि आपने ही हमें जीवन जीना सिखाया। राजा होकर भी हमारे जीवन में किसी भी प्रकार का दुर्व्यसन नहीं है यह कोई छोटी बात है। जैसे आज नेताओं में पुराने राज घरानों में चल रहा है तो वहां भी चलता लेकिन यह प्रभाव मात्र महर्षि के जीवन और उपदेशों का है जो कई पीढ़ी तक प्रभावित रहा उनकी इच्छा भविष्य के लिए भी थी पर पता नहीं अब उनके सुपुत्र कितना पालन कर पा रहे हैं। आज महर्षि जी के अन्नय भक्त थे उनकि विचारों का प्रचार करते रहते थे इसमे बार–बार प्रधान पद को सुशोभित किया आर्य समाज का सम्मेलन जहाँ भी हुआ प्रसन्नता से जाकर शोभा बढ़ाते थे। एक आर्य समाज के सम्मेलन में दरियां बिछाई हुई थी और मार्ग की आगे ही यज्ञकुण्ड बना हुआ था उसे भी वस्रें से ढक दिया था लोगों की भीड़ नारे लगाते चल रही थी नीचे किसी ने ध्यान नही दिया पांव जैसे ही यज्ञकुण्ड में गिरे भारी शरीर का वजन सन्तुलित नहीं हो पया और टांग टूट गई फिर कई महीने तक अस्पताल में रहे तथी से वे बाहर जाने बन्द हो गए। जनता पर उनके स्वभाव का प्रभाव पड़ता था कि जब राजा साहब आर्य समाज में हैं तो हमें भी सदस्य बनना चाहिए। ऐसे धुन के धनी और समर्पित निष्ठ से महर्षि के विचारां को जीवन में उतारकर अन्यों को भी प्रेरणा देने वाले राजार्षि राजा रणञ्जय सिंह ने जो शिक्षा क्षेत्र में विद्यालय स्थापना संचालन कार्य किया है वह स्वर्णिम इतिहास का सुन्दरतम स्वर्णिम अध्याय है। भावी पीढ़ी इस दिशा में चिन्तन करे जीवन सुधारने के लिए वेदों के मार्ग का अनुकरण करें ऐसी सद्बुद्धि परमात्मा हमें सभी आर्यो को प्रदान करें।

"वेद ईश्वरी ज्ञान है, इसके प्रमाण"

– खुशहाल चन्द्र आर्य

वेद ईश्वरीय–ज्ञान है, इसके निम्नलिखित प्रमाण हैं–

1. सृष्टि और वेदों में एकता : सृष्टि में हम जो कुछ देखते है, वैसा ही वेदों में लिखा हुआ है। जब सृष्टि ईश्वर ने बनाई है तो इससे सिद्ध होता है कि वेद भी ईश्वर के ही बनाए हुए हैं। यदि वेद ईश्वर के बनाए हुए नहीं होते तो सृष्टि भी वेदों के अनुसार नहीं होती। जब सृष्टि में और वेदों में एक रूपता है तो इससे सिद्ध होता है कि दोनों चीजें किसी एक ही की बनाई हुई हैं। अब प्रश्न उठता है कि सृष्टि भी ईश्वर ने नहीं बनाई। ईश्वर ने बनाई इसका क्या प्रमाण है? इसका उत्तर यह है कि जीव की क्षमता ही नहीं कि वह सृष्टि बना सके। सृष्टि बनाने के लिए सर्वव्यापक, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान को होना जरूरी है। जीव अल्पज्ञ है, एक स्थानीय है और सीमित आयु वाला है इसलिए जीव सृष्टि नहीं रच सकता। यह तीनों गुण ईश्वर में है इसलिए सृष्टि ईश्वर ने रची है। सृष्टि जड़ है यानि अचेतन है तब भी सृष्टि किसी नियम के अनुसार चलती है। जैसे सूर्य समय पर उगता है और समय पर छिपता है। पृथ्वी सूर्य के चारों तरफ घूमती है और स्वयं भी अपनी परिधि में घूमती है और चन्द्रमा पृथ्वी के चारों तरफ परिक्रमा करता है। जड़ वस्तु में स्वयं में बनने की शक्ति नहीं होती। उसको बनाने के लिए या चलाने के लिए किसी चेतन बुद्धिमान की आवश्यकता होती है। नियम पूर्वक चलने वाली सृष्टि का कोई नियमाक (नियम से चलाने वाला) अवश्य होना चाहिए। इससे सिद्ध होता है कि सृष्टि का नियामक ईश्वर है।

2. वेदों में जीव के लिए पूर्ण ज्ञान है : वेदों में मनुष्य को जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त उसको क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं करने चाहिए सब लिखा है। जीव का मुख्य लक्ष्य मोक्ष पाना है जो मनुष्य योनि में ही सम्भव है। मनुष्य के लिए चार पुरुषार्थ निर्धारित किये गये हैं। वे हैं– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। धर्म, अर्थ और काम को धार्मिक भावना के साथ कर्त्तव्य भाव से करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। मनुष्य को कैसे जीना चाहिए जिससे वह मोक्ष–प्राप्त कर यह सब ज्ञान वेदों में हैं, यानि वेद पूर्ण ज्ञान के भण्डार हैं। पूर्ण ज्ञान वहीं दे सकता है जो स्वयं में पूर्ण होगा। जीव अल्पज्ञ है वह वेद–ज्ञान नहीं दे सकता। ईश्वर पूर्ण है उसी ने वेद–ज्ञान दिया है। पूर्ण ईश्वर का दिया हुआ ज्ञान भी पूर्ण होगा। इसलिए वेद ज्ञान भी अपने आप में पूर्ण है जो ईश्वर से आदि सृष्टि में मनुष्य उत्पत्ति के साथ ही चार ऋषियों द्वारा जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगीरा थे उनके मुखों से चार वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अर्थववेद क्रमशः उच्चारित किए गये। पूर्णता ज्ञान भी पूर्ण होता है इसलिए वेद–ज्ञान भी पूर्ण है।

3. वेदों में किसी के प्रति कोई भेद–भाव नहीं : ईश्वर ने वेद–ज्ञान केवल मानव–मात्र ही नहीं बल्कि प्राणी–मात्र के कल्याण के लिए दिया है। ईश्वर सब जीवों को उनके कर्मानुसार योनियों में भेजता है इसलिए ईश्वर सब का पिता हुआ और सब जीव उसके पुत्रवत हुए। कभी पिता अपने पुत्रों में कोई भेद–भाव नहीं रखता। सब के कल्याण की सोचता है इसलिए ईश्वर ही सभी जीवों के कल्याण की सोचता है। वेदों में सभी जीवों के कल्याण व उपकार की बातें है इसलिए सिद्ध होता है कि वेद का ज्ञान–ईश्वरी दिया हुआ है यदि किसी मनुष्य का दिया हुआ हो तो उसमें भेद–भाव होता कारण मनुष्य अल्पज्ञ है वह अपनो का कल्याण व उपकार करना चाहता है सबका नहीं।

शेष पृष्ट -६ पर

www.thearyasamaj.org

ईश्वर सर्वज्ञ-सर्वव्यापक है

– रूपचन्द्र दीपक

स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।।

–यजुर्वेदः अध्याय–४०, मन्त्र–८

पदार्थ :– (सः) वह परमात्मा (शुक्रम) सर्वशक्तिमान् (अकायम्) स्थूल, सूक्ष्म एवं कारण शरीर से रहित (अव्रणम्) छिद्ररहित और न छेद करने योग्य (अस्नाविरम्) नाड़ी आदि से रहित (शुद्धम्) सदा पवित्र (अपाप–विद्धम्) पाप से सर्वथा अलग (परि अगात्) सब ओर से व्याप्त (कविः) सर्वज्ञ (मनीषी) सब जीवों के मनों को जानने वाला (परिभूः) दुष्टों का तिरस्कार करने वाला (स्वयम्भूः) अनादिस्वरूप (शाश्वतीभ्यः) सनातन (समाभ्यः) प्रजाओं के लिए (याथातथ्यतः) यथार्थ रूप से (अर्थान्) सब पदार्थों को (व्यदधात्) रचता है।

ईश्वर शरीर धारण नहीं करता–

ईश्वर सर्वत्र व्यापक होने से शरीर धारण नहीं कर सकता। वह स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर एवं कारण शरीर, तीनों प्रकार के शरीरों से पृथक् है। स्थूल शरीर से अभिप्राय है यह दिखायी देने वाला अर्थात् हाथ, पैर, मुख, पेट, हृदय, फेफड़े, आँत आदि अंगों वाला शरीर। सूक्ष्म शरीर से अभिप्राय है स्थूल शरीर के भीतर रहने वाले मन, बुद्धि सूक्ष्म इन्द्रियां, प्राण एवं पञ्च सूक्ष्म भूत। यह सूक्ष्म शरीर मनुष्य की मृत्यु के पश्चात् जीव के साथ अगली योनि में जाता है। किन्तु ईश्वर को इसकी आवश्यकता नहीं है। वह प्राण के बिना अस्तित्व में रहता, इन्द्रियों के बिना कार्य करता, बुद्धि के बिना ज्ञान को धारण करता और मन के बिना संकल्प करता है। कारण शरीर में बाँधकर ही जीवात्मा को संसार में भेजता है। जीवात्मा कारण शरीर को त्याग कर मोक्ष की प्राप्ति करता है। उसे मोक्ष में इसकी आवश्यकता नहीं होती। सदैव मुक्त रहने का कारण ईश्वर को इसकी कभी आवश्यकता नहीं होती।

अशरीर होने के कारण ईश्वर में कोई व्रण (फोड़ा) नहीं हो सकता। सर्वज्ञ होने के कारण उसमें कोई व्रण (छिद्र) अर्थात् दोष नहीं हो सकता। वह अस्नाविरम् अर्थात् नस–नाड़ी के बन्धन में नहीं आता। जीवात्मा भी नस–नाड़ी से अधिक सूक्ष्म है किन्तु शरीर में आने के कारण वह नस–नाड़ी के सम्बन्ध रूपी बन्धन में आ जाता है। ईश्वर तो शरीर धारण न करने के कारण नस–नाड़ी के सम्बन्ध रूपी बन्धन से भी रहित है।

सर्वशक्तिमान होने का अर्थ–

ईश्वर शुक्रम् अर्थात् सर्वशक्तिमान है। इसका यह अभिप्राय नहीं है कि वह जो चाहे सो कर सकता है। ऐसा करने से तो अव्यवस्था फैल जाएगी। वह नियम–विरुद्ध कार्य नहीं कर सकता। उसने पृथ्वी को आकार, आकृति गति, घूमने की दिशा परिभ्रमण का चक्र आदि दिये हैं। सूर्य को भी आकार, आकृति, प्रकाश, उष्मा आदि दिये हैं। गुरुत्वाकर्षण, प्रकाश का सीधी रेखाओं में चलना, जन्म एवं मृत्यु आदि के नियम बनाये हैं। वह इन नियमों के विपरीत कर्म नहीं करता। वह अपनी व्यवस्था को भंग नहीं कर सकता। सर्वशक्तिमान होने का तात्पर्य है कि वह अपने कार्य में किसी की सहायता नहीं लेता, कर्म करता–करता थकता नहीं और उसकी व्यवस्था में कोई दोष नहीं होता। ईश्वर पवित्रस्वरूप है और कभी पाप से नहीं विंधता। जीवात्मा पाप से बिंध जाता है अर्थात् पाप में फंस जाता है। जो जीवात्मा इस समय पाप में फंसा है, वह तो फंसा ही है। जो इस समय निष्पाप है, वह भी किसी समय पाप में फंस सकता है। जो मोक्ष प्राप्त करने वाला है वह मोक्ष की अवधि में तो पवित्र रहेगा किन्तु अवधि समाप्त होन पर जब पुनः संसार में आयेगा तब पाप में फंस सकता है। जीवात्मा अन्यों को भी पाप में फंसा देता है। किन्तु ईश्वर कभी किसी को पाप की प्रेरणा नहीं देता। वह पाप से सदा पूर्णतः मुक्त रहता है।

ईश्वर सर्वज्ञ है–

ईश्वर कविः अर्थात् सर्वज्ञ है। वह समस्त पिण्डों की संख्या, परिणाम एवं स्थिति को जानता है। वह समस्त जीवों की संख्या, कर्म एवं भाव को भी जानता है। वह ज्ञानस्वरूप एवं ज्ञानप्रदाता है। जीवात्मा अल्पज्ञ है, ईश्वर द्वारा प्रदत्त ज्ञान को अल्प मात्रा में धारण कर सकता है, समस्त पिण्डों के विषय में नहीं जान सकता। एक पिण्ड अथवा परमाणु को पूर्णतः नहीं जान सकता। यहां तक कि वह अपने शरीर के विषय में भी सब कुछ नहीं जान सकता।

ईश्वर स्वयंभूः अर्थात् स्वयं अस्तित्व में है। उसको किसी के उत्पन्न नहीं किया। वैसे तो जीव एवं प्रकृति भी अनादि–अनन्त हैं। इनकी किसी ने रचना नहीं की। किन्तु प्रकृति सृष्टि एवं प्रलय रूप परिवर्तन में आती रहती है। जीव भी कभी बन्ध में, कभी मोक्ष में, कभी सुख में और कभी दुःख में पड़ता रहता है। जीव एवं प्रकृति पर ईश्वर का पूर्ण वश है और ईश्वर पर इनका कोई वश नहीं है। इसलिए सही अर्थों में ईश्वर ही स्वयंभू है।

ईश्वर राजा और सब जीव उसकी प्रजा है। वह अपनी प्रजाओं के लिए अन्न, जल, वायु आदि सब पदार्थों का धारण करता है। जीव इन पदार्थों का भोग करते हुए निरन्तर कर्म भी कर रहे हैं। ईश्वर इन कर्मों का न्यायोचित फल जीवों को देता है। यह उसका शाश्वत नियम है। सभी जीव उसके नियमों से बंधें हैं। अतः वही सबका उपास्यदेव है।

मो० :९८३६१८१६६०

साप्ताहिक सत्संग

आर्य समाज जय ओइम नगर अमरोहा में दिनांक ११ दिसम्बर सन् २०१६ को साप्ताहिक सत्संग का आयोजन हुआ। जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा श्री शक्तिकुमार जी यजमान श्री दीपक जी सपत्नीक रहे।

पूर्ण आहुति के पश्चात श्रीमती प्रियंका जी ने यजुर्वेद का पाठ अर्थ सहित सुनाया व श्रीमती विनिता जी ने सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर सुनाया, श्रीमती हेमलता जी ने भजन सुनाए व श्री माधव जी व राघव जी ने आर्य समाज के दस नियम पढ़े। अन्त में गोष्ठी में बोलते हुए श्री शक्तिकुमार जी ने निम्न विषय पर कहा

आर्य मान्यता में नारी का समाज में स्थान– समाज के निर्माण में स्त्री व पुरुष का दोनो का बराबर स्थान है, पुरुष और स्त्री गृहस्थ की गाड़ी के दो बराबर पहिए हैं। गृहस्थ की उन्नति के लिए आवश्यक है कि ये दोनों ठीक प्रकार से एक दूसरे को सहयोग देते चले। पुरुष और स्त्री दोनों के अपने–अपने गुण हैं, अपने–अपने क्षेत्र और अधिकार हैं दोनों एक दूसरे के प्रतिद्वन्दी नहीं है अपितु सहयोगी तथा पूरक हैं, पुरुष इसलिए पुरुष है कि उसमें पौरुष अर्थात बल पराक्रम है, दुष्ट दमन तथा श्रेष्ठ की रक्षा में समर्थ है, माता निर्मात्री भवति 'माता' इसलिए इसका नाम है क्योंकि वह सन्तानों का निर्माण करती है, उन्हें जन्म देकर पालन पोषण करती है तथा उत्तम शिक्षा देती है, लज्जा तथा शालीनता नारी के स्वाभाविक गुण हैं, परन्तु आवश्यकता पड़ने पर नारी भी पुरुष का पैरुष धारण कर सकती है, जैसे रानी लक्ष्मी बाई ने किया था। अतः जिस घर में नारियों का सत्कार होता है, उस घर में उत्तम गुण, उत्तम पदार्थ तथा उत्तम सन्तान होते हैं, और जिस घर में स्त्रियों का सम्मान नहीं होता उस घर में चाहे कुछ भी यत्न करों सुख की प्राप्ति नहीं होती, सती प्रथा, बाल विवाह, अनमेल विवाह तथा पर्दा प्रथा वेद और वैदिक संस्कृति के विपरीत हैं, दहेज प्रथा समाज पर लानत है, और कालाधन इसके लिए जिम्मेदार है, अन्त में शान्ति पाठ हुआ।

इस अवसर पर श्री चन्द्रपाल सिंह जी, श्री रमेश जी सागर, श्री हरिशिन, श्री पूरन सिंह सैनी जी, श्री लेखराम जी, श्री जगदीश सरन जी, श्री जीवन सिंह जी, श्री दीपक जी, श्री माधव जी, श्री राघव जी, श्रीमती हेमलता, श्रीमती प्रियंका जी, श्रीमती मन्जू जी श्रीमती विनीता जी, श्रीमती चन्द्रकरण जी आदि उपस्थित थे।

www.thearyasamaj.org

पृष्ठ -१ का शेष

महर्षि विरजानन्द जी...........

विदेशियों का गुलाम हो रहा है। जाओ दयानन्द इन बुराइयों से देश को स्वतन्त्र कराओ व बचाओ, यही मेरी गुरू दक्षिणा होगी।

ऋषि विरजानन्द का संक्षिप्त जीवन परिचय – गुरू विरजानन्द जी का जन्म १७७६ में पंजाब के करतारपुर के निकट ग्राम-गंगापुर में हुआ था। पांच वर्ष की अल्प आय में ये चेचक के कारण नेत्र दृष्टि से हीन हो गये थे। और तेरह वर्ष की आयु में माता-पिता की छत्र-छाया से भी वंचित हो गये थे। इन सभी बाधाओं के होते हुए भी उन्होंने साहस और धैर्य का पल्लू नहीं छोड़ा और अपने युग के संस्कृत व्याकरण के अद्वितीय विद्वान बने।

अष्ठाध्यायी अध्ययन का पुनः उद्धार करने और आर्ष पद्धति का आविष्कार करके इतिहास में अपना स्थान बनाया। वे राष्ट्र भक्ति निर्भयता और आत्मसम्मान व आर्ष पद्धति के दिव्य मूर्ति थे। उन्होंने युगों के पश्चात वेदों को स्वतः प्रमाण घोषित किया, और निरक्त, शास्त्र महाभाष्य, अस्टाध्यायी के माध्यम से वेदों के ईश्वर परक अर्थ बताये। और विश्व को महर्षि दयानन्द जैसा महान शिष्य दिया। जिन्होंने आगे चलकर १८७५ में मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। और दयानन्द जी ने भारत की प्रसुप्त आत्मा को जगाया। और मानव जाति को वेदों का संदेश दिया। ऋषि विरजानन्द जी ने संसार को आर्ष व अनार्ष साहित्य का ज्ञान का उपदेश देकर वृहद कल्याण किया जो आगे चलकर सामाजिक जगत में अमूल परिवर्तन का कारण सिद्ध हुआ।

महर्षिदयानन्द जी का संक्षिप्त परिचय व कार्य– ऋषि दंयानन्द का जन्म (१८२४- १८३३ ईसवी) में भारत के कठियावाड प्रान्त के मोरेवी राज्य के टंकारा ग्राम में हुआ था। पिता का नाम कर्सन जी लाल जी त्रिवेदी था। वे ओदिच्य ब्राहमण थे। उनका बचपन का नाम मूलशंकर था, सन्यास लेने के बाद उनका नाम दयानन्द हुआ १४ वर्ष की आयु में यजुर्वेद कण्ठस्थ कर लिया था- एक दिन शिवरात्री के पर्व पर शिव की मूर्ति के सामने उनके दर्शन की प्रबल इच्छा से सारी रात काट दी। शिव के दर्शन तो क्या होने थे, उन्होंने देखा कि चूहे बिलों से निकल आये और मूर्ति पर चढ़े नैवेद्य को खाने लगे। यह देख मूलशंकर के हृदय में जिज्ञासा उत्पन्न हुई ये कैसे देवता हैं जो चूहों से भी अपनी रक्षा नहीं कर सकते हैं उनकी इस शंका का समाधान कोई न कर सका यही कारण है उन्होंने मूर्ति पूजा का जबर्दस्त खण्डन किया।

ऋषि दयानन्द जी ने अनके ग्रन्थ लिखे उनका मुख्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश है। उन्होंने सामाजिक विचार धारा को क्रियात्मक रूप देने के लिए १० अप्रैल १८७५ में बम्बई के एक मोहल्ले गिरगांव में आर्य समाज की स्थापना की आर्य समाज अपने जन्म काल से आज तक सामजिक, धार्मिक तमाम बुराईयों को मिटाने के लिए चट्टान की तरह खड़ा है और आगे भी रहेगा। उन्होंने संसार के कल्याण के लिए सत्यार्थ प्रकाश अमर ग्रन्थ की रचना करी।

अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में महर्षि दयानन्द के विचार– यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान प्रत्येक मतों में हैं, वे पक्षपात छोड़कर सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात जो-जो बाते सबके अनुकूल सब में सत्य है उनका ग्रहण और जो एक दूसरे के विरूद्ध बाते है, उनका त्याग कर परस्पर प्रगति से वर्त-वर्तायें तो जगत का पूर्ण हित होवे, क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानो में विरोध बढ़कर अनेक प्रकार विधि दुख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इस हानि ने जो कि स्वार्थी मनुष्यों को प्रिय है सब मनुष्यों को दुख सागर में डुबा दिया है। इनमें से जो कोई सार्वजनिक हित लक्ष्य में प्रवृत होता है, उससे स्वार्थी लोग विरोध करने पर तत्पर होकर अनेक प्रकार विघ्न करते हैं परन्तु **–सत्यमेंव जयति नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः।**

सर्वदा सत्य का विजय और सत्य का पराजय और सत्य ही से विद्वानों का मार्ग विस्तृत होता है। इस दृढ़ निश्चय के आलम्ब से आप्त लोग परोपकार करने से उदासीन होकर कभी नहीं सत्यार्थ प्रकाश करने से हटते।

सत्यार्थ प्रकाश उत्तरार्द्ध : अनुभूमिका (1) से–

मनुष्य जन्म का होना सत्या सत्य के निर्णय करने कराने के लिए है न कि वाद-विवाद विरोध करने कराने के लिए। इसी मतमतान्तर के विवाद से जगत में जो-जो अनिष्ट फल हुए होते है, और होंगे उनकी पक्षपात रहित विद्ववतजन जान सकते हैं जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मतमतान्तर का विरूद्धवाद न छूटेगा तब तक अन्य का आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विशेष विद्ववतजन ईर्ष्या द्वेष छोड़ सत्या सत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना कराना चाहे तो हमारे लिए यह बात असाध्य नहीं है। यह निश्चय है कि इस विद्वानों के विरोध ने ही सबको विरोध जाल में फंसा रखा है यदि ये लोग अपने प्रयोजन में न फंस कर सबके प्रयोजन को सिद्ध करना चाहें तो अभी ऐक्यमत हो जायें।

महर्षि दयानन्द जी के देवतय कार्य–शिष्य हो तो ऐसा हो–

१. वेदों के रूढ़ी अर्थो पर प्रहार कर निरुक्त शास्त्र के अनुसार ईश्वर परक अर्थ बताऐं। २. रूढ़ीवादी पर प्रहार कर प्रत्येक क्षेत्र में रूढ़ीवाद को तिलान्जलि देने का नारा लगाया। ३. सामाजिक क्षेत्र में रुढ़ीवाद पर प्रहार करके हिन्दु धर्म को रखते हुए उसके अन्दर से काया पलटने का कार्य किया। ४. राजनैतिक क्षेत्र में रूढ़ीवाद पर प्रहार करे कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। ५. समाजवादी विचार धारा पर प्रहार करके जाति-पाति, छुआ- छूत, उंच- नीच सामा- जिक कुरीति बताया। गुरूकुल शिक्षा प्रणाली में ही समाजवाद प्राप्त होना, आदि।

महर्षि दयानन्द जी भारत के १६वीं शताब्दि के सबसे महान सामाजिक विचारक थे उनकी छाप आने वाले सब विचारकों पर पड़ी। उन्होंने अपने क्रान्तिकारी विचारों से युग में परिवर्तन कर दिया, आज जो हम स्वतन्त्रा एवं समाज में व्याप्त कुरीतियों के व्यापक अर्थ-अनर्थ को सोच समझ रहे है सब उनकी देन है, और इन विचारों को चिर स्थाई रखने के लिए अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश लिखा और आर्य समाज का गठन कर दिया महर्षि विरजानन्द जी एवं ऋषि दयानन्द जी के हम सदैव ऋणी रहेंगे।

आज की आवश्यकता– संसार के सभी धर्माचार्यो को सत्य और सर्व हितकारी विषयों में एक मत होकर धर्मोपदेश करना चाहिए। आर्य समाज संगठन संसार के धर्माचार्यो का आवाहन करता है कि आइए हमारे साथ मिलकर जगत का उपकार करें।

मो० ६४११५१२०१६

ईश्वर के मुख्य गुण, कर्म व स्वभाव

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

महर्षि दयानन्द सरस्वती (१८२५–१८८३) ने अपने सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों में ईश्वर के स्वरूप पर व्यापक रूप से प्रकाश डाला है। इसके आधार पर हम ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव को भी जान सकते हैं। यह हम सभी का आवश्यक कर्तव्य भी है, इसलिए कि जिस ईश्वर ने हमारे लिए इस सृष्टि को बनाय और जो हमारा माता– पिता व आचार्यवत् पालन कर रहा है, हम उसका उपकार माने और उसका उचित रीति से धन्यवाद व आभार व्यक्त करें। अतः ईश्वर को जानना हमारे सबके लिए आवश्यक है। ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव को जान लेने पर संसार के सम्बन्ध में काफी कुछ जान लिया जाता हैं। ईश्वर के गुणों की चर्चा करें तो ईश्वर जड़ पदार्थ न होकर वह एक सच्चिदानन्द स्वरूप गुणों वाली सत्ता है। इसका अर्थ यह है कि ईश्वर की सत्ता है, वह चेतन पदार्थ है तथा वह सदा सर्वदा सब दिन व काल में आनन्द में अवस्थित रहता है। उसे कदापि दुःख व अवसाद आदि नहीं होता जैसा कि जीवात्माओं व मनुष्यों को होता है। चेतन का अर्थ है कि ज्ञानयुक्त वा संवेदनशील सत्ता। प्रकृति व सृष्टि जड़ होने के कारण इसमें ज्ञान का सर्वथा अभाव होता है। ईश्वर निराकार भी है। निराकार का अर्थ होता है कि जिसका आकार न हो। हमारे शरीर का एक आकार है जिसका कैमरे से चित्र बनाया जा सकता है। आकार को आकृति कह सकते हैं। हमारे शरीर की तो आकृति है परन्तु शरीर में स्थित जो जीवात्मा है उसका आकार स्पष्ट नहीं होता। वह एक बहुत सूक्ष्म बिन्दूवत है जो सत, रज व तम गुणों वाली परमाणु रूप प्रकृति से भी सूक्ष्म है। अतः जीवात्मा का निश्चित आकार वा आकृति नहीं है परन्तु एक देशीय सत्ता होने के कारण हमारे कुछ विद्वान जीवात्मा का आकार मानते हैं तथा कुछ नहीं भी मानते। इसका अर्थ यही है कि जीवात्मा एक एकदेशीय, ससीम व अति सूक्ष्म सत्ता है जिसके आकार का वर्णन नहीं किया जा सकता। अतः जीवात्मा निराकर के समान ही है परन्तु एक देशीय होने के कारण उसका आकार एक सूक्ष्म बिन्दु व ऐसा कुछ हो सकता है व है, इसलिए कुछ विद्वान जीवात्मा को साकार भी मान लेते हैं।

ईश्वर निराकार है, इसका अर्थ है कि उसका कोई आकार व आकृति नहीं है। निराकार का एक कारण उसका सर्वव्यापक व अनन्त होना भी है। ईश्वर इस समस्त चराचर जगत व ब्रह्माण्ड में सर्वान्तर्यामी स्वरूप से व्यापक है। उसकी लम्बाई व चौड़ाई अनन्त होने व उसके मनुष्य के समान आंख, नाक, कान, मुख व शरीर न होने के कारण वह अस्तित्वान होकर भी आकर से रहित अर्थात् निराकार है। ईश्वर का एक गुण सर्वज्ञ होना भी है। सर्वज्ञ का अर्थ है कि वह अपने, जीवात्मा और सृष्टि के विषय में भूत व वर्तमान का सब कुछ जानता है और उसे भविष्य में कब क्या करना है वह भी जानता है। वैदिक सिद्धान्त है कि ईश्वर त्रिकालदर्शी है जिसका अर्थ है कि ईश्वर जीवों के कर्म आदि व्यवहारों की अपेक्षा से भूत, भविष्य व

शेष पृष्ठ -८ पर

www.thearyasamaj.org

पृष्ठ -३ का शेष **वेद ईश्वरी ज्ञान .....**

४. वेदों के सभी मन्त्र बहुवचन में हैं : वेद पूरे मानव–मात्र के है इसीलिए उनके सभी मन्त्र बहुवचन में हैं। यदि किसी एक देश या समुदाय का होता तो एक वचन में होता। वेदों के सभी मन्त्र ईश्वर को सम्बोधित करके लिखे गये हैं। इसलिए वेद, ईश्वर के बनाए हुए हैं। उदाहरण के लिए दो मन्त्र, अर्थ सहित यहाँ लिखे जाते हैं–

ओ३म विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आ सुव।।
यजु० अ० ३० ।मंत्र ३।।

अर्थ– हे सकल जगत के उत्पत्ति कर्ता समग्र ऐश्वर्य मुक्त शुद्ध स्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुखों को दूर कीजिए और जो कल्याण कारक गुण, धर्म स्वभाव और पदार्थ है, वह सब हमको प्राप्त कीजिए।

दूसरा मंत्र–

ओ३म स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमान शानास्तुतीये धामन्यध्यैश्यन्त।।
यजु० ३२ ।मंत्र २०।।

अर्थ– हे मनुष्यों! वह परमात्मा अपने लोगों का भ्राता के समान सुखदायक, सकल जगत का उत्पादक, वह सब कार्यों को पूर्ण करते हुए, सम्पूर्ण लोक–मात्र और नाम, स्थान, जन्मों को जानता है और जिस संसारिक सुख–दुःख से रहित नित्यानन्द मुक्त, मोक्ष स्वरूप धारण करते हुए परमात्मा में मोक्ष को प्राप्त हो के विद्वान लोग स्वेच्छा पूर्वक विचरते हैं, वही परमात्मा अपना गुरू, आचार्य राजा और न्यायाधीश है। अपने लोग मिल के सदा उसकी भक्ति किया करें।

इन दो मन्त्रों से यह सिद्ध हो गया है कि वेदों के सभी मन्त्र बहुवचन में है और ईश्वर को ही सम्बोधित किया गया है। इसलिए वेद ईश्वर की ही रचना है।

ईश्वर तू महान है

– खुशहाल चन्द्र आर्य

ईश्वर तू महान है, सबका रखता ध्यान है।
तेरा ही एक आसरा, सब सुखों की खान है।।
ईश्वर तू महान है.....
पृथ्वी और आकाश बनाये, नदी और नाले खूब सजाये।
सूरज चन्दा को चमकाए, जो देते हमको प्राण है।।
ईश्वर तू महान है.....
पेड़ और पौधे उगाये तुमने, फल और फूल लगाये तुमने।
मीठे रसों से सरसाये तुमने, जो देते हमको जीवन दान है।।
ईश्वर तू महान है.....
जंगल, पर्वत बनाये तुमने, जल और वायु बहाये तुमने।
चारों वेद रचाये तुमने, जो देते हमको सच्चा ज्ञान है।।
ईश्वर तू महान है.....
सच्चे मन से ध्याया तुमको, तन और मन लगाया तुमको।
हरवक्त हृदय में पाया तुमको, "खुशहाल" बन किया अमृतपान है।।
ईश्वर तू महान है, सब का रखता ध्यान है।
तेरा ही एक आसरा, सब सुखों की खान है।

मो० : ८२३२०२५५६०, ६४३०१३५७६४

आर्य समाज का भी ख्याल रखा जाए

बुलन्दशहर : ०१ जनवरी सावरकरवाद प्रचार सभा के नए अध्यक्ष रमेश चन्द्र सक्सेना वैदिक ने पंजाब सरकार पर आरोप लगाया है कि वह खालिस्तान सरकार की तरह कार्य कर रही है। उसने अमृतसर की किसी पुरानी तथा प्रसिद्ध आर्य समाज को विकसित करने के लिए एक पैसा भी नहीं लगाया है। वह तो केवल सिक्खों का ही ख्याल करती है जबकि अमृतसर तथा अन्य नगरों में आर्य समाजें बहुत हैं।

नए अध्यक्ष वैदिक जी ने भाजपा पर भी आरोप लगाया है कि वह कांग्रेस तथा सपा पर परिवारवाद को बढ़ावा देने की आलोचना करती है जबकि उसे अकाली दल में परिवार वाद दिखाई नहीं देता है क्यों? वहां तो मुख्यमंत्री तथा उपमुख्यमंत्री पद पर बाप–बेटे डटे हुए हैं और भाजपा उनका साथ दे रही है। सक्सेना जी ने पंजाब सरकार से मांग की है कि वह अमृतसर के किसी पुरानी एवं प्रसिद्ध आर्य समाज को विकसित एवं भव्यता प्रदान करने लिए कम से कम एक हजार करोड़ रूपये व्यय करे।

स्मरण रहे कि पंजाब सरकार ने अमृतसर के प्रसिद्ध गुरूद्वारे को भव्य एवं सुन्दर बनाने के लिए तीन हजार करोड़ रूपये व्यय किये हैं।

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा फर्रूखाबाद के तत्वावधान में छठे भव्य चरित्र निर्माण शिविर का अयोजन

फरूखाबाद जनपद की भूमि को आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सात बार पधार कर कृतार्थ किया हो, वहीं पर प्रवाहित होने वाली पवित्र नदी गंगा के सुरम्य तट पर प्रतिवर्ष माघ महीने में लगने वाले मेला रामनगरिया पांचाल घाट फर्रुखा– बाद में गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी दिनांक १४ जनवरी से ११ फरवरी तक मानव उत्थान, विश्व कल्याण की भावना के साथ तथा वैदिक धर्म प्रचार–प्रसार हेतु छठे भव्य चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन जिला आर्य प्रतिनिधि सभा फर्रूखाबाद के तत्वावधान में तथा सभा प्रधान पूजनीय आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री जी के पावन सानिध्य में किया जा रहा है। जिसमें आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान, भजनोपदेशक, सन्यासियों द्वारा वेद प्रचार किया जायेगा। शिविर, आर्य वीर दल, संस्कृत सम्भाषण, पठदर्शन परिचय आदि शिविरों का आयोजन किया जायेगा। वेद संस्कृत, गौ, गंगा गायत्री, राष्ट्र रक्षा तथा नारी सशक्तिकरण आदि विषयों पर विविध सम्मेलनों का आयोजन भी किया जायेगा। दिनांक १.२.१७ (बसंत पंचमी) पर विशाल शोभायात्रा निकाली जायेगी तथा दिनांक ५.२.१७ को विराट कवि सम्मेलन का आयोजन किया जायेगा।

सभी भक्तजनों से निवेदन है कि इस आयोजन में पधार कर सफल बनाये तथा विद्वानों के वचनों का श्रवण कर लाभ उठायें।

संदीप कुमार आर्य
मो० ७२७५७१३०३१

पृष्ठ -१ का शेष
आर्य कन्या स्नातकोत्तर .....

को होता है। इसलिए उस पाप के निवारणार्थ उतना सुगन्ध वा उससे अधिक वायु और जल में फैलाना चाहिए। और खिलाने –पिलाने से उसी एक व्यक्ति को सुख विशेष होता है। जितना घृत और सुगन्धादि पदार्थ एक मनुष्य खाता है उतने द्रव्य के होम से लाखों मनुष्यों का उपकार होता है, परन्तु जो मनुष्य लोग घृतादि उत्तम पदार्थ न खावें तो उनके शरीर और आत्मा के बल की उन्नति न हो सके, इससे अच्छे पदार्थ खिलाना–पिलाना भी चाहिए उससे होम अधिक करना उचित है इसलिए होम का करना अत्यावश्यक है। "यज्ञ के सम्बन्ध में महर्षि का यह कथन पूर्णतः सत्य व खरा है। हर आर्यजन का यज्ञ करना उतना ही आवश्यक है जितनी अन्य क्रियायें जीवन में जरूरी हैं। कन्या गुरुकुल सासनी की ब्रह्मचारियों ने मंत्रोच्चारण किया और यज्ञ को सफल बनाया।

निर्वाचन

आर्य समाज गोला गोकर्ण नाथ का वार्षिक निर्वाचन आर्य प्र० सभा उ०प्र० द्वारा नियुक्त निर्वाचन अधिकारी श्री रणधीर सिंह आर्य प्रतिष्ठित सदस्य आर्य प्र० सभा उ०प्र० की देखरेख में सम्पन्न हुआ जिसमें सर्व सम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी मनोनीति हुये।

प्रधान –	मंत्री–	कोषाध्यक्ष –
श्री पतिराखन लाल वर्मा	श्री नवीन भसीन	श्री ओमप्रकाश वैश्य

www.thearyasamaj.org

सोशल मीडिया के कागज़ी शेरों की वर्चुवल दहाड़

– सीताराम गुप्ता

आज के दौर में जब भी कोई प्रिय अथवा अप्रिय घटना घटित होती है तो लोग सोशल मीडिया पर फौरन सक्रिय हो जाते हैं। वो फौरन अपनी सहमति, अथवा अपने विरोध या गुस्से का इज़हार करने लगते हैं। गलत के प्रति विरोध ही नहीं पीड़ित के प्रति संवेदनो, सहयोग व एकजुटता का इजहार कने में भी पीछे नहीं रहते। लेकिन उनकी संवेदना, सहयोग अथवा एकजुटता क्षणिक होती है। उनकी भावनाएं बरसात में पानी के बुलबुलों की तरह पैदा होती हैं और जल्दी ही फूट भी जाती है। किसी भी मुद्दे से वो जल्दी ऊब जाते हैं और नए मुद्दों की तलाश में भटकने लगते हैं।

कम्प्यूटर व इंटरनेट के संदर्भ में एक शब्द है वर्चुवल वर्ल्ड या आभासी दुनिया अर्थात् काल्पनिक संसार। अध्यात्म जगत के मायाजन्य संसार की तरह आभासी दुनिया का भी कोई अस्तित्व नहीं होता। ये संसार जो दिखता है पर मात्र कल्पना है, धोखा है, छलावा है हमारा सोशल मीडिया भी बिल्कुल वैसा ही है। यह भी कल्पना, धोखा अथवा छलावा मात्र ही है। इस पर जो घटित होता है वास्तविक जीवन में उसके क्रियान्वयन की संभावना अत्यंत अल्प या नाम मात्र की ही होती है। वीडियों गेम्स की तरह ही ये एक लत से अधिक कुछ नहीं है। सोशल मीडिया के नाम पर संचार माध्यमों का दुरुपयोग ही तो हो रहा है।

सोशल मीडिया के शेर कागज के शेर हैं जो शेर जैसे दिखते तो हैं पर शेर जैसा कुछ भी तो नहीं है उनमें। रंग–रूप, आकार–प्रकार अथवा शेर जैसी दहाड़ सब आभासी अथवा बनावटी हैं सोशल मीडिया पर जो प्रतिक्रियाएं व्यक्त की जाती हैं वो माध्यम की तरह ही काल्पनिक या आभासी होती हैं। उनका जीवन की वास्तविकता से कोई लेना–देना नहीं होता। हमारे आसपास, हमारे परिचितों के आसपास याहमारे परिवेश में नहीं अपितु मीडिया पर जब कोई घटना वायरल होती है तो हमारा पौरुष जागृत हो उठता है। तब सोशल मीडिया रूपी यज्ञ में हम अपनी आहुति डालने में किसी से भी पीछे नहीं रहना चाहते लेकिन अपने आसपास घटित होने वाली घटनाओं से हमारा कोई सरोकार नहीं होता यही है आज की आधुनिकतम सोच।

अपने आस पास के माहौल से हम निर्लिप्त ही बने रहते हैं। जब हमारी ऑखों के सामने किसी पर अत्याचार होता है तो हम न केवल मुँह फेर कर आगे बढ़ जाते हैं अपितु पूरी तरह से संवेदनहीन बने रहते हैं। हम वहाँ गलत हो रहे काम अथवा अत्याचार व उत्पीड़न को रोकने के लिए न स्वयं आगे आते हैं और न किसी को पुकारते ही हैं। तब हमारे मोबाइल फोन हरकत में नहीं आते। हाँ सेल्फी लेने और घटनाओं का वीडियों बनाने में हम माहिर हो चुके हैं। किसी को अत्याचार से बचाने के बजाय उसका वीडियों बनाना ज्यादा सेफ है। हम क्यों दूसरों के पचड़े में पड़े? राय देना अलग बात है। संविधान ने हमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी है। हम अपने अधिकारों का प्रयोग करना जानते हैं।

हैं कुछ लोग जो अपने आसपास के माहौल के प्रति सचेत व संवेदशील होते हैं और वो मुँह फेर कर आगे बढ़ते लेकिन कितने? लाखों में इक्के–दुक्के। इतने से काम नहीं चलने का। बाकी सब कागजी शेर हैं। हम कोई रिस्क नहीं लेना चाहते। सोशल मीडिया इस दृष्टि से सुरक्षित है। उस पर अपनी भड़ास निकालना निरापद है। वहाँ कुछ खोने का डर नहीं है। वहाँ किसी की नज़रों में आने का भय नहीं है। वहाँ किसी से आमना–सामना होने का खतरा नहीं मंडराता। जहां वास्तव में कुछ करने की जरूरत होती है वहां हमारी बोलती बंद हो जाती है। वहाँ मुकबला तो दूर जवाब देना भी मुमकिन नहीं होता। मुमकिन हो भी तो कैसे? हमारे हाथ व्यस्त रहते हैं मोबाइल के बटन दबाने में और कानों में ठुंसे होते हैं म्यूजिक के प्लग्स। हम केवल और केवल संगीत सुनने के अभ्यस्त हो चुके हैं अतः रुदन न तो हमें पसंद ही है और न हमारे कानों तक पहुँच ही पाता है। इसमें हमारा क्या दोष?

सोशल मीडिया पर हमारी पूरी पकड़ है। वहाँ हम शेर की तरह दहाड़ सकते हैं। किसी भी विषय पर बेबाक टिप्पणी कर सकते हैं चाहे वह समाज या राष्ट्र के हित में हो या न हो। कहीं धर्म के नाम पर तो कहीं छद्म राष्ट्रवाद के नाम पर अधिकांश लोग अपने–अपने तरीके से उग्रवाद को बढ़ावा दे रहे हैं। जिनको अपनी गली का भूगोल भी पता नहीं वो अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर अपनी राय दे रहे हैं। इधर–उधर से नकल करके विद्वान बनने की कोशिश कर रहे हैं। कॉमन सेंस को तलाक दे रखा है। अनाप–शनाप कुछ भी लिखा जा रहा है। पढ़ो और सिर धुनो। उनके ही जैसे हो तो और आगे फैलाओ। अपने आपको चर्चा में लाने के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते हैं।

और कुछ नहीं तो चेन्नै में दो युवकों ने, जो मेडिकल के विद्यार्थी थे, एक निरीह मूक प्राणी एक छोटे–से कुत्ते के बच्चे को छत से नीचे फेंकर उसका वीडियों बनाकर अपलोड कर दिया। क्या ही सुंदर उपयोग है सोशल मीडिया का और वो भी भावी डॉक्टर्स के द्वारा। वीडियों वायरल हो गया। वायरल तो होना ही था पर वायरल क्यों हुआ? क्योंकि हम कुछ न कुछ नया, कुछ एक्साइटिंग–सा देखना चाहते हैं। और कुछ नया, कुछ एक्साइटिंग–सा देखने–दिखाने की ख्वाहिश में ही कहीं किसी मूक जानवर के प्रति निर्दयता की जा रही होती है तो कहीं किसी महिला के साथ घिनौना व्यवहार किया जा रहा होता है।

हैदराबाद में भी कुछ युवकों ने कुछ पिल्लों को जिंदा आग के हवाले कर दिया और घटना का वीडियों बनाकर अपलोड कर दिया। वीडियों में आग से जलते हुए पिल्ले जोर–जोर से चीख रहे हैं। कहाँ गई हमारी संवेदनाएं? क्या हुआ हमारी करुणा को? किसी जानवर को जिन्दा जलाने से परहेज नहीं पर किसी के लिए संगठित होकर आन्दोलन करने पर आमादा। एक ओर कुत्तों को बेमौत मार रहे हैं अथवा उन्हें पीड़ा पहुंचा रहे हैं तो दूसरी ओर बकरियों के हक के लिए अनशन करने पर तुले हुए हैं। कोई घोड़ों की चिंता में दुबला हुआ जा रहा है तो कोई गधों की चिंता में बेचैन है। और गुजरात में जो हुआ क्या यही हमारी राष्ट्रीयता है? कमजोर वर्ग के लोगों को पीटना व उनका वीडियों बनाकर अपलोड कर देना क्या यही है सोशल मीडिया का उत्कर्ष? ये सभी घटनाएं आठ–दस दिन के अंदर की हैं। ये वो घटनाएं हैं जो प्रकाश में आ गई। ऐसी भी असंख्य घटनाएं होती हैं जो वायरल नहीं होती अथवा एक वर्ग विशेष या समुदाय विशेष तक पहुँचकर विस्फोटक का कार्य करती हैं।

सोशल मीडिया पर हम एक आवाज में लाखों को इकट्ठा करने की ताकत रखते हैं। वहां पूरे समाज को जोड़ लेते हैं। दंगे भड़काने हों, अफवाहें फैलानी हो, किसी का चरित्रहनन करना हो, धार्मिक असहिष्णुता अथवा आतंकवाद को बढ़ावा देना हो तो आपके इस सोशल मीडिया से अच्छा हथियार नहीं। इस वर्चुअल वर्ल्ड में जिसको भी गैजेट्स का इस्तेमाल करना आ गया वही बादशाह है चाहे उसे अपने नाम की सही स्पैलिंग लिखना या सही उच्चारण करना भी न आता हो। भीड़ का नाम समाज नहीं होता। भीड़तंत्र समाज का हित नहीं करता। भीड़तंत्र से देश की अखण्डता अक्षुण्ण नहीं रहती। निरुद्देश्य अथवा गलत उद्देश्य के लिए एक मंच पर आने को एकता नहीं कहा जाता। जीवन की वास्तविकता सिर्फ यस अथवा नो से नहीं परखी जा सकती।

शौक नवाबी किस्म का है इसमें कोई संदेह नहीं। लेकिन इस नवाबी शौक से समाज अत्याचार से मुक्त नहीं होता। समाज में परस्पर विश्वास का माहौल नहीं बनता। बहुत से बच्चे हैं जो गली में किसी के अत्याचार से त्रस्त हैं और घर से बाहर निकलने से भी घबराते हैं। न जाने कितनी किशोरियों ने गली के नुक्कड़ पर हमेशा खड़े रहने वाले और आती–जाती लड़कियों से छेड़खानी करने वाले आवारा लड़कों के भय से त्रस्त होकर स्कूल–कॉलेज जाना छोड़ दिया है। क्या आपका सोशल मीडिया इस विषय में कुछ करने में सक्षम है? हाँ, क्यों नहीं? सोशल मीडिया पर इस विषय पर भी बहस की जा सकती है। सोशल मीडिया को काल्पनिक युद्ध लड़ने का एक काल्पनिक हथियार बनाकर हम मात्र इसका दुरुपयोग ही कर सकते हैं। आवश्यकता है तो इसे मात्र मनोरंजन या गेम्स की तरह न लेकर इसका सदुपयोग करने की, गंभीर उपयोग करने की।

सोशल मीडिया कुछ लोगों के लिए झूठी शान बघारने का तो कुछ लोगों के लिए दगाबाजी ठगी व फरेब करने का जरिया बन चुका है। और अंत में एक चुटकुला जो इस सोशल मीडिया की वास्तविकता को उजागर करने के लिए पर्याप्त होगा। एक व्यक्ति के पेट में भयंकर दर्द हुआ। उसे फौरन डॉक्टर के पास ले जाया गया। उसका मुआयना करते समय डॉक्टर ने पूछा,

शेष पृष्ठ -८ पर

www.thearyasamaj.org

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
प्रधान- ०६४१२६९८५७१, मंत्री- ०९८३७४०२१६२, सम्पादक- ९५३२७४६६००
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
....
....
....

आवश्यक सूचना

आर्य बन्धुओं, बहिनो,

आपको सूचित करना है कि वैदिक पुत्री पाठशाला, नई मण्डी, मुजफ्फनगर में तीन दिवसीय दिनांक ०५, ०६ एवं ०७ जनवरी, २०१६ को सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया है। आपसे निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर यज्ञ का लाभ उठायें।

अरविन्द कुमार
प्रबन्धक
वैदिक पुत्री पाठशाला
नई मण्डी, मुजफ्फर नगर

ऋग्वेद महा परायण यज्ञ

आर्य समाज सम्भल के निकट मोहल्ला ठेर के वर्मा भवन में दिनांक १४ जनवरी से १६ जनवरी २०१६ को ऋग्वेद महा परायण यज्ञ का आयोजन किया गया है। यज्ञ के ब्रह्मा आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, वेदपाठी गुरुकुल पूंठ हापुड़ के ब्रह्मचारी गण तथा आमंत्रित विद्वत् जन स्वामी लक्ष्मण देव जी, श्री वीरेन्द्र रत्नम् जी मेरठ, पं० जगत वर्मा जी, जलान्धर जी आदि हैं।

समस्त धर्म प्रेमी बन्धु –बान्धवों से निवेदन है कि इस महायज्ञ में पधार कर पुण्य के भागीदार बने तथा विद्वानों के प्रवचनों को श्रवण कर लाभ उठावें।

सम्पर्क सूत्र : ९८३७०५२ ६४१
९८३७३१५०३०

नया वर्ष हम तुमको शुभ हो

हितेश कुमार शर्मा

कोहरा हटे उगे नव सूरज, नवल–धवल आशाएं लेकर।
आने वाले नए वर्ष में, पूरी हों इच्छाएँ गुरुतर।
सुख–शान्ति की किरन धरा पर, पड़े उगे विश्वासी सपने।
साथ खड़े हो जाएं आकर, जितने भी है सारे अपने।
द्वेष, दम्भ, पाखण्ड सरीखे, जलें आग में काले विषधर।
रोज दिवाली–होली जैसे, हँसी–खुशी त्यौहार मनाएँ।
उड़े गुलाल प्रफुल्लित मन हो, घर–आँगन में दीप जलाएँ।
रहें सतर्क सदा जीवन में, शत्रु वार न कर दे हम पर।
खुशहाली हो सकल विश्व में, कहीं कपट छल भाव नहीं हो।
बहे प्रेम रसधार हृदय में, कटुता भरा स्वभाव नहीं हो।
धन की गंगा बहे देश में, काले धन का सूखे सागर।
नई कल्पनाएं पूरी हों, समस्याओं का समाधान हो।
हर अनीति से, हर कुरीति से, ऊपर अपना संविधान हो।
भारत में भारत के वासी, रहें सदा आपस में मिलकर।
भारत के विकास में आने वाली सब बाधा मिट जाएँ।
शत्रु या गद्दार देश के पकड़े जाएँ, मारे जाएँ।
नागरिक रहे सभी भारत के, सुख–शान्ति से निभर्य होकर।
चर्तुदिशा में शुभ ही शुभ हो, समाचार जो आए शुभ हो।
मेरे मित्र और सम्बन्धी, नया वर्ष हम–तुमको शुभ हो।
है हितेश की यही कामना, नया वर्ष हो हमको शुभकर।

पृष्ठ -५ का शेष

ईश्वर के मुख्य गुण....

वर्तमान आदि को जानता है। ईश्वर में ऐसे असंख्य व अनन्त गुण हैं जिसे वेदाध्ययन व सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों का अध्ययन कर जाना जा सकता है।

ईश्वर के कर्मों की चर्चा करने पर हम पाते हैं कि उसने सत्, रज व तम गुणों वाली अत्यन्त सूक्ष्म त्रिगुणात्मक प्रकृति से इस समस्त दृष्यमान जगत सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, मनुष्यादि प्राणियों की रचना की है और वही इसकी व्यवस्था, संचालन व पालन कर रहा है। यह सभी कार्य ईश्वर के कर्म व कर्तव्यों में आते हैं। ईश्वर का दूसरा मुख्य कर्म व कर्तव्य अनन्त जीवों को उनके पूर्वजन्म व कलप आदि के शुभ व अशुभ कर्मों का न्यायोचित फल अर्थात् सुख व दुःख देना है। जीवों को उनके कर्मानुसार सुख व दुःख रूपी फल सहित उनके श्रेष्ठ कर्मों के अनुसार मोक्ष प्रदान करने के लिए ही ईश्वर ने सृष्टि की रचना की है। इससे यह ज्ञात होता है कि मनुष्यों सहित इतर समस्त योनियों में जीवात्माओं के जन्म व मृत्यु आदि की व्यवस्था ईश्वर करता है। ईश्वर सभी जीवों की जीवात्माओं में शुभ कर्म करने की प्रेरणा भी करता है। मनुष्य जब कोई अच्छा काम करता है तो उसे प्रसन्नता होती है और जब बुरा चोरी आदि काम करता है तो भय, शंका व लज्जा आदि अनुभव होती है, यह अनुभूतियां व प्रेरणायें ईश्वर की ओर से ही होती है जिसका उद्देश्य सदकर्मों को करवाना व अशुभ कर्मों से छुड़ाना है। यह सभी ईश्वर द्वारा किये जाने वाले कर्म हैं। ईश्वर ने इस सृष्टि व ब्रह्माण्ड को धारण किया हुआ है तथा सृष्टि की आयु ४.३२ अरब वर्ष होने पर वह इसकी प्रलय करता है। यह सब ईश्वर के मुख्य कर्म कहे जाते हैं। ईश्वर सर्वशक्तिमान है और इस कारण वह अपने किये जाने वाले सभी कार्यों को अकेला ही करता है। उसे अपने कार्यों में किसी अन्य सहायक अर्थात् विशेष पुत्र व सन्देशवाहक की आवश्यकता नहीं होती। ईश्वर के कुछ कर्मों को जानने के बाद अब हम ईश्वर के स्वभाव के विषय में विचार करते हैं।

ईश्वर का स्वभाव न्यायकारी, दयालु व सभी जीवों को सुख प्रदान करना हैं अपने इसी स्वभाव के कारण वह जीवों के लिए सृष्टि की रचना कर उन्हें उनके कर्मानुसार नाना योनियों में जन्म देता है। दुष्टों को वह रुलाने वाला है। जो मनुष्य दुष्ट स्वभाव वा प्रकृति के होते हैं, ईश्वर उनको भय, शंका व लज्जा के रूप में व जन्म– जन्मान्तर में उसके कर्मों के अनुसार दुःख रूपी फल देकर रुलाता है। अच्छे व शुभ कर्म करने वालों को सुख देकर भी वह उन्हें आनन्दित करता है यह उसका स्वभाव है। वह सभी जीवों के साथ न्याय करता है। उसके न्याय के डर का ही लोग पाप के मार्ग को छोड़कर धर्म व पुण्य कर्मों को करते हैं। हमें लगता है कि जो लोग अनावश्यक हिंसा, मांसाहार, मदिरापान, भ्रष्टाचार व कालेधन का संग्रह आदि करते हैं वह घोरतम अविद्या से ग्रस्त हैं। उनकी आत्मायें मलों से आवृत अर्थात् ढ़की हुई हैं। जैसे दर्पण पर मल जम जाये तो उसमें आकृति छति दिखाई नहीं देती, इसी प्रकार दुष्ट आत्मायें होती हैं जिन पर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अशुभ इच्छा, द्वेव रूपी अविद्या का गहरा आवरण उनकी आत्माओं को ढक लेता है और आत्मा ईश्वर से मिलने वाली प्रेरणाओं को या तो सुनता ही नहीं या उन्हें अनसुना कर देता है। इससे आत्मा का घोर पतन होने के साथ उसका भविष्य व परजन्म दुःखों को भोगने का आधार बनता हैं विवेकी व विद्वान इन सब बातों को जानकर ही असत्य को छोड़ सत्य मार्ग पर चलते हुए ईश्वर साक्षात्कार कर विवेक को प्राप्त होकर जन्म व मरण के चक्र व बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं। जीवों को आनन्दमय मोक्ष की प्राप्ति के लिए ही ईश्वर ने इस सृष्टि को रचा है जिसमें ऋषि दयानन्द, लेखराम, गुरूदत्त, श्रद्धानन्द व दयानन्द जी जैसी आत्मायें मुमुक्ष बन कर कल्याण को प्राप्त होती है।

हम आशा करते हैं कि पाठक इस लेख द्वारा ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव को कुछ जान सकेंगे। इसी के साथ लेख को विराम देते हैं। ओ३म भाम्।

फोन ०६४१२६९८५१२१

पृष्ठ -७ का शेष

सोशल मीडिया के ....

"कल शाम को डिनर में क्या लिया था?'' उस व्यक्ति ने कहा, "कल शाम को डिनर में मैंने हॉट एण्ड सोअर सूप, पास्ता, फ्राइज, पिज्जा, और पेपर डोस लिया था। उसके बाद थोड़ी–सी आइसक्रीम और बस दो रसगुल्ले।'' डॉक्टर ने उस व्यक्ति को ध्यानपूर्वक देखते हुए तनिक सख्ती से पूछा, "ये फेसबुक नहीं है। सच बताओ क्या–क्या खाया था?'' व्यक्ति ने जवाब दिया, "सुबह की बची हुई दाल और रोटी।'' यह एक चुटकुला है लेकिन सोशल मीडिया की तरह वर्चुवल नहीं अपितु हमारे जीवन की वास्तविकता को प्रकट करने में पूर्णतः सक्षम। इस चुटकुले में अच्छी तरह से झलकती है हमारे सोशल मीडिया की तल्ख़ सच्चाई।

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रुप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।